CHAPTER -२

डायरी का एक पन्ना

WORKSHEET

१ कौन सा दिन अमर था और क्यों ?

२ प्रचार प्रसार केलिए कितना पैसा खर्च किया गया था ?

३ प्रत्येक मोड पर कौन कौन तैनात थे ?

४ शाम को सभा कहाँ और कितने बजे होने वाली थी ?

५ सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था ?

६ कानून भंग का कार्य क्यों शुरू हुआ है ?

७ कितने स्त्रियाँ मोड पर बैठ गई और क्यों ?

८ २६ जनवरी १९३१ क्यों महत्वपूर्ण था ?

९ जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

१० पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

११ अपाठित गद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

हमारे बाल्यकाल के संस्कार ही जीवन का ध्येय निर्धारित करते हैं, अतः यदि शैशव में हमारी संतान ऐसे 'व्यक्तियों की छाया में ज्ञान प्राप्त करेगी, जिनमें चरित्र तथा सिद्धांत की विशेषता नहीं है, जिनमें संस्कारजनित अनेक दोष हैं, तो फिर विद्यार्थियों के चरित्र पर भी उसी की छाप पड़ेगी और भविष्य में उनके ध्येय भी

उसी के अनुसार स्वार्थमय तथा अस्थिर होंगे। शिक्षा एक ऐसा कर्तव्य नहीं है जो किसी पुस्तक को प्रथम पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक पढ़ाने से ही पूर्ण हो जाता हो, वरन् वह ऐसा कर्तव्य है जिसकी परिधि सारे जीवन को घेरे हुए है और पुस्तकें ऐसे साँचे हैं जिनमें ढालकर उसे सुडौल बनाया जा सकता है।

यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है कि हम अपने साधारण कार्यों के लिए करने वालों में जो योग्यता देखते हैं, वैसी योग्यता भी शिक्षकों में नहीं ढूँढ़ते। जो हमारी बालिकाओं, भविष्य की माताओं का निर्माण करेंगे उनके प्रति हमारी उदासीनता को अक्षम्य ही कहना चाहिए। देश-विशेष, समाज-विशेष तथा संस्कृति-विशेष के अनुसार किसी के मानसिक विकास के साधन और सुविधाएँ उपस्थित करते हुए उसे विस्तृत संसार का ऐसा ज्ञान करा देना ही शिक्षा है, जिससे वह अपने जीवन में सामंजस्य का अनुभव कर सके और उसे अपने क्षेत्र-विशेष के साथ ही बाहर भी उपयोगी बना सके। यह महत्त्वपूर्ण कार्य ऐसा नहीं है जिसे किसी विशिष्ट संस्कृति से अनभिज्ञ चंचल चित्त और शिथिल चरित्र वाले व्यक्ति सुचारु रूप से संपादित कर सकें।

परंतु प्रश्न यह है कि इस महान उत्तरदायित्व के योग्य व्यक्ति कहाँ से लाए जाएँ? पढ़ी-लिखी महिलाओं की संख्या उँगलियों पर गिनने योग्य है और उनमें भी भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षिताएँ बहुत कम हैं, जो हैं उनके जीवन के ध्येयों में इस कर्तव्य की छाया का प्रवेश भी निषिद्ध समझा जाता है। कुछ शिक्षिकावर्ग को उच्छृखलता समझी जाने वाली स्वतंत्रता के कारण और कुछ अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण अन्य महिलाएँ अध्यापन-कार्य तथा उसे जीवन का लक्ष्य बनाने वालियों को अवज्ञा और अनादर की दृष्टि से देखने लगी हैं।

अतः जीवन के आदि से अंत तक कभी किसी अवकाश के क्षण में उनका ध्यान इस आवश्यकता की ओर नहीं जाता, जिसकी पूर्ति पर उनकी संतान का भविष्य

निर्भर है। अपने सामाजिक दायित्वों को समझा जाना चाहिए। यह समाज में आज सबसे बड़ी कमी है।

(क) संस्कारजनित दोषों से युक्त व्यक्तियों से ज्ञान प्राप्त करने पर विद्यार्थियों के चरित्र पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ख)शिक्षा को कैसा कर्तव्य बताया गया है?

(ग) लेखक ने किसे आश्चर्य कहा है?

(घ) शिक्षा वास्तव में क्या है?

१२ (प्रश्न) निम्नलिखित प्रश्नो में रेखांकित पदों का पदबंध भेद बतायें।

(क) <u>अयोध्या के राजा दशरथ</u> के चार पुत्र थे।

<u>(ख)धिरे चलने वाली</u> गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।

<u>(ग)बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने</u> बालक को गिरने से बचा लिया।

<u>(घ)बरगद और पीपल की घनी छाँव</u> से हमें बहुत सुख मिला

(ड) <u>दो ताकतवर लोग</u> इस चीज को गिरा पाए।

१३ अनुच्छेद- लिखिए ----

मेरा भारत महान

अथवा

छात्र जीवन में योग का महत्व